आंबेडकर पथ ❙ वर्ष : 1 ❙ अंक : 01 ❙ जनवरी-जून 2024 ❙ ISSN : 3048-7781

हिन्दी कविता में अभिव्यक्त आंबेडकर की वैचारिकी

–डॉ. राजकुमार उपाध्याय मणि
–श्रीमती रीना मिश्रा

डॉ. भीमराव आंबेडकर भारत के ऐसे राजनेता हैं, जिन्होंने अपने विचार को सार्वभौमिक सिद्धांतों के अनुरूप स्थापित करने का प्रयास किया है। उन्होंने समाज में विभिन्न विद्रूपताओं को मिटाने के साथ-साथ उसे परिमार्जित करने की कोशिश की है। यद्यपि इसके लिए उन्हें अनेक सामाजिक विरोधों और अवरोधों को भी झेलना पड़ा है। समाज की विघटनकारी शक्तियों के द्वारा भी उनकी उपेक्षा के साथ-साथ भारतीय समाज को कमजोर करने की कोशिश की गई। परन्तु अपने साहस का परिचय देते हुए डॉ. आंबेडकर ने अपने एक अलग पथ का निर्माण किया, जिसका लाभ आज पूरे भारतीय समाज को भी प्राप्त हो रहा है। समय-समय पर भारत में ऐसी अनेक विभूतियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिनसे भारत ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों के साथ मानव समाज का भी कल्याण हुआ है। डॉ. आंबेडकर ने अपने वैचारिक सिद्धांतों और रचनाओं को अंग्रेजी तथा मराठी भाषाओं में लिपिबद्ध किया है। परन्तु आजकल हिन्दी की रचनाओं में विशेष रूप से आधुनिक दलित वर्ग की समाज-चेता के रूप में डॉ. आंबेडकर जी को एक उन्नायक के रूप में अपनाया गया है। दलित लेखकों के साथ दलित साहित्य के विभिन्न पक्षों के उद्घाटन में कहीं-न-कहीं डॉ. आंबेडकर की वैचारिकी एक दिशा के रूप में प्राप्त

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय बठिंडा (पंजाब)
अध्येता, उ.प्र. राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ.प्र.)
Email : rkumani@gmail.com

होती है। हिन्दी की अनेक कविताओं में डॉ. आंबेडकर को बहुत आदर्श और प्रेरणा के साथ उनके सिद्धांतों और दर्शनों की अभिव्यक्ति मिलती है। हिन्दी के छायावाद के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने भी आंबेडकर जी पर एक अच्छी कविता लिखी है–

आंबेडकर, आंबेडकर!
तुम हो भारत के वीर,
तुम हो दलितों के मसीहा,
तुम हो मानवता के पुरोधा।

तुमने जन्म लिया था,
एक अछूत परिवार में,
पर तुमने अपने बल पर,
दुनिया को जीत लिया।

दलित कवयित्री के रूप में ख्यात सुशीला टाकभौरे ने अपने कविता-संग्रह 'हमारे हिस्से का सूरज' की एक कविता में डॉ. आंबेडकर को दलितों का मसीहा बताया है–

दलित अछूत ढूंढ़ रहे थे,
पीड़ाओं से मुक्ति का मार्ग
अंधेरे में आशा का प्रकाश
जिससे विश्वास कर सकें
दुनिया उनकी भी है
उन्हें भी जीने का हक है।
दलितों के मसीहा बाबासाहेब
ने राह दिखाई है।

उनके विषय में ओमप्रकाश मेरोठा ने अपनी एक कविता में जहाँ दलितों का समाज सुधारक बताया हैं, वहीं दलित समाज के लिए एक प्रकाश पुंज के लिए भी स्मरण किया है। क्योंकि ततयुगीन परिवेश में कहीं-न-कहीं भारतीय समाज के शासक वर्गों द्वारा निम्न वर्ग की उपेक्षा की गई थी और उन्हें उचित स्थान नहीं दिया गया था–

भीमराव आंबेडकर जी, बाबासाहेब तुम्हें प्रणाम।
भारत की पावन गाथा में, अगर तुम्हारा नाम ॥
भीम जैसा सूरज अगर निकला न होता,
हम दलितों के जीवन में ये उजाला न होता।
मर गये होते यूं ही जुल्म सहकर;
अगर हमें भीम जैसा रखवाला मिला न होता ॥
दलित समाज सुधारक को बाबासाहेब कहते हैं,
जलते दीपक बनकर सदा हमारे दिल में रहते हैं।
अमीरों का दिया हर अत्याचार सहा था उसने,
फिर भी दो वक्त की रोटी भी कमा न पाया था ॥

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी-मराठी के दलित कवि हैं, जिन्होंने वर्ण और जाति का उपहास किया है। दलित कवि ने अपने शब्दों में लिखा है–

वह दिन कब आयेगा, बामनी नहीं जनेगी बामन।
चमारी नहीं जनेगी चमार, भंगिन भी नहीं जनेगी भंगी ॥[1]

देवपुत्र दैनिक समाचार-पत्र में गौरीशंकर वैश्य की प्रकाशित कविता में उन्होंने डॉ. आंबेडकर को अंग्रेजी दासता से मुक्ति दिलवाने और छुआछूत को मिटाने वाले के रूप में याद किया है–

अंग्रेजी की दासता से, भारत को मुक्ति दिलाई,
छुआछूत के प्रति मुखरित वाणी, जागरूकता लाई।
जाति-पांति से किया बराबर, जीवन भर संग्राम।
तुम इतिहास पुरुष, भारत के संविधान निर्माता,
गणतांत्रिक व्यवस्था पोषित, जन-जन भाग्य विधाता।
सभी बराबर हैं समाज में, प्रिय संदेश ललाम।
भारत की पावन गाथा में अगर तुम्हारा नाम ॥

डॉ. आंबेडकर को अनेक कविताओं में उन्हें भारत को आज़ाद करने वाले, स्वतंत्र भारत को अखंड स्वरूप बनाने वाले, भारतीय संविधान के निर्माता, समाज के हर वर्ग

को समान अधिकार दिलाने वाले, हर वर्ग को शिक्षित कराने वाले, समाज में कानून लागू करने वाले आदि अनेक रूपों में देखा गया है। मयंक बिश्नोई ने कुछ इसी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति अपनी कविता 'संविधान निर्माता' में की है–

हर वर्ग को शिक्षित करने में
हर व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करने में
स्वतंत्र भारत को अखंड भारत बनाने में
संविधान निर्माता डॉक्टर आंबेडकर का
असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों का
अविस्मरणीय योगदान भुलाया नहीं जा सकता
तप-त्याग की महान परिभाषा है डॉक्टर आंबेडकर
इस परिभाषा को कभी झुठलाया नहीं जा सकता।

राज वाल्मीकि की न्यूज-क्लिक डेस्क में 14 अप्रैल, 2022 को प्रकाशित 'मैं आंबेडकर बोल रहा हूँ... भेद तुम्हारे खोल रहा हूँ' नामक अपनी कविता में आंबेडकर जी के योगदान, प्रभाव को समाज के प्रति नकारात्मक स्वर में लेते हुए लिखा है–

'मज़हब पर लड़वाने वालो
दंगों को करवाने वालो
जनता को भरमाने वालो
भेद तुम्हारे खोल रहा हूँ
मैं आंबेडकर बोल रहा हूँ।'

जबकि इसके विपरीत सुखमंगल सिंह ने अपनी कविता 'भीमराव आंबेडकर' में उनकी समरसता दृष्टि को अभिव्यक्त किया है–

गूंज उठा आर्यावर्त का जन जन, उनके पदचिह्नों पर बढ़ा कदम।
आंबेडकर का हम करें स्मरण, बाबा भीमराव जी को करें नमन ॥

बी. गोपाल रेड्डी ने अपनी कविता संग्रह 'लोकालोक' में डॉ. आंबेडकर को याद करते हुए उनके अवदानों को रेखांकित किया है कि उनके कारण निम्न-समाज के लोग आगे

आ सके हैं और उन्हें अनेक प्रकार के अधिकारों का लाभ भी मिल सका है–

गांधी जी का प्रेमभरा प्रचार
आंबेडकर के क्रोधभरे भाषणों के आसार
सब वयस्कों को मतदान का अधिकार
विधानसभाओं के स्थान का आरक्षण
उच्चशिक्षा की सुविधाएं, छात्रावास–
इन सबने उनमें जागृति फैलाई।
जाग पड़े हैं शताब्दियों की नींद के नशे को छोड़कर
खड़े हुए हैं, युग-युगों की समाज-शृंखलाएं तोड़कर ॥[2]

कांता बौद्ध ने अपनी धारदार कविता 'कलम से कत्ल' में लिखा है–

सदियों बाद आज
बाबासाहब भीमराव आंबेडकर ने
हम दलितों का
उद्धार किया ॥

अशोक भारती ने 'ब्राह्मणवाद का विनाशक' नामक कविता में डॉ. आंबेडकर के संघर्ष के संदर्भ में लिखा है–

मैं ही हूँ
मध्य एशिया से अयोध्या तक
तुम्हारी सर्वश्रेष्ठता को ललकारने वाला
विद्रोह का स्वर-क्रांति का परचम
मैं हूँ एकलव्य-अर्जुन का घमण्ड तोड़ने वाला।
याद रहे, मैं ही रहूँगा–
आज ही नहीं, हमेशा
तुम्हारी व्यवस्था के खिलाफ़
विद्रोह का परचम-क्रांति का हिरावत
मैं हूँ आंबेडकर–ब्राह्मणवाद का विनाशक।[3]

निम्न वर्ग की सामाजिक व्यवस्था को व्यक्त करते हुए जयप्रकाश कर्दम की 'लालटेन' नामक कविता की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

रोज शाम को
लालटेन की चिमनी को साफ करना भी
माँ नहीं भूलती थी।
दरअसल, माँ को हमारी पढ़ाई-लिखाई की बड़ी चिंता रहती थी
इसलिए, मजदूरी करने से लेकर
हंडिया-रोटी और लत्ते-कपड़े तक
घर-बाहर के सारे काम
वह खुद करती थी
हमको वह
सिर्फ पढ़ने के लिए कहती
'पढ़ाई-लिखाई ही तुम्हारी पूंजी है,
पढ़-लिख लोगे तो कहीं
अच्छा हिल्ला पा जाओगे
नहीं तो तसले ढोवोगे
दूसरों की गुलामी करोगे'
यही हमें समझती।[4]

एक दलित कवि के रूप में पहचान बना चुके मलखान सिंह ने अपनी कविता 'सुनो ब्राह्मण' में विरोध का स्वर सुनाई पड़ता है–

सुनो भूदेव
तुम्हारा कद
उसी दिन घट गया था
जिस दिन कि तुमने
न्याय के नाम पर
जीवन को चौखटों में कस
कसाई बाड़ा बना दिया था।[5]

मलखान सिंह आगे इसी कविता में लिखते हैं–

तो सुनो वशिष्ठ!
द्रोणाचार्य तुम भी सुनो!
हम तुमसे घृणा करते हैं
तुम्हारे अतीत
तुम्हारी आस्थाओं पर थूकते हैं।[6]

कई आधुनिक दलित कवियों में आक्रोश की भावना दिखाई देती है। किंतु, यह विचारणीय है कि सतसाहित्य की श्रेणी में नहीं आ सकता है क्योंकि काव्यशास्त्रियों ने समाज का हित रखने वाले साहित्य को ही साहित्य माना है। जबकि इनकी सीमा में ऐसे लिखित साहित्य का साहित्यिक महत्त्व कम मालूम होता है। जिस आंबेडकर जी ने संविधान में समाज के हर वर्ग को महत्त्व दिया है, उनकी दृष्टि में विभेदयुक्त साहित्य को कोई स्थान नहीं दिया जा सकता है क्योंकि समतायुक्त समाज में साहित्य को समृद्ध किया जा सकता है और सतसाहित से श्रेष्ठ समाज की रचना की जा सकती है। आज की आवश्यकता और प्रासंगिकता है कि डॉ. आंबेडकर के विचार दर्शन को आगे बढ़ाते हुए समाज और साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में स्थापित करें और उपेक्षित भाव को मिटाने का प्रयास करें।

संदर्भ सूची :

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि–दलित निर्वाचित कविताएं, (सं. कंवल भारती), पृ. 66
2. बी. गोपाल रेड्डी–लोकालोक, पृ. 20
3. अशोक भारती–दलित निर्वाचित कविताएं, (सं. कंवल भारती), पृ. 192
4. जय प्रकाश कर्दम–दलित निर्वाचित कविताएं, (सं. कंवल भारती), पृ. 82
5. मलखान सिंह–दलित निर्वाचित कविताएं, (सं. कंवल भारती), पृ. 50
6. -वही-, पृ. 51